७ मूडबिद्रीकी ताडपत्रीय प्रतियोंके मिलानका निष्कर्ष

यह तो पाठकोंको विदित ही है कि इन सिध्दान्तग्रंथोंकी प्राचीन प्रतियां केवल एकमात्र मूडबिद्रीक्षेत्रके सिध्दान्तमंदिरमें हैं । पूर्व प्रकाशित दो भागोंके लिये हमें इन प्राचीन प्रतियोंके पाठ-मिलानका सुअवसर प्राप्त नहीं हो सका था । किन्तु हर्षकी बात है कि अब हमें वहां के भट्टारकस्वामी और पंचोंका सहयोग प्राप्त हो गया है, जिसके फलस्वरुप ताडपत्रीय प्रतियोंके मिलानकी व्यवस्था हो गई है । पूर्व प्रकाशित दोनों भागों और इस तृतीय भागका मूल पाठ वहांकी ताडपत्रीय प्रतियोंसे मिलाया जा चुका है और उससे जो पाठभेद हमें प्राप्त हुए हैं उनपर खूब विचार कर हमने उन्हें चार श्रेणियोंमें विभाजित किया गया है-

(अ) वे पाठभेद जो अर्थ व पाठको दृष्टिसे अधिक शुध्द प्रतीत हुए । (देखो परिशिष्ट पृ. २० आदि)

(ब) वे पाठभेद जो शब्द और अर्थ दोनों दृष्टियोंसे दोनों ही शुध्द हैं, अतएव जो संभवत: प्राचीन प्रतियोंके पाठभेदोंसे ही आये हैं । (देखो परिशिष्ट पृ. २९ आदि)

(क) वे पाठभेद जो प्राकृतमें उच्चारणभेदसे उत्पन्न होते हैं और विकल्परुपसे पाये जाते हैं । (देखो परिशिष्ट पृ. ३२ आदि)

(ड) वे पाठभेद जो अर्थ या शब्दकी दृष्टिसे अशुध्द हैं और इस कारण ग्रहण नहीं किये जा सकते । (देखो परिशिष्ट पृ. ३८ आदि)

इस श्रेणी-विभागके अनुसार मूडबिद्रीकी प्रतियोंका पाठ-मिलान इस भागके साथ प्रकाशित हो रहा है । संक्षेपमें यह पाठभेद-परिस्थिति इस प्रकार आती है--

मूडबिद्रीकी ताडपत्रीय प्रतियोंके मिलानका निष्कर्ष

(अ) श्रेणीके पाठभेद भाग १ में ६२, भाग २ में २५ और भाग ३ में ६२, इस प्रकार कुल १४९ पाये गये हैं । भेद प्राय: बहुत थोडा है और अर्थकी दृष्टिसे तो अत्यन्त अल्प । यह इस बातसे और भी स्पष्ट हो जाती है कि इन पाठभेदोंके कारण अनुवादमें किंचित् भी परिवर्तन करनेकी आवश्यकता केवल भाग १ में १९, भाग २ में १० और भाग ३ में ३२, इस प्रकार कुल ६१ स्थलोंपर पडी है । शेष ८८ स्थलोंका पाठपरिवर्तन वांछनीय होनेपर भी उससे हमारे किये हुए भाषानुवादमें कोई परिवर्तन आवश्यक प्रतीत नहीं हुआ ।

(ब) श्रेणीके पाठभेद भाग १ में ३०, भाग २ में कोई नहीं और भाग ३ में ३२, इस प्रकार कुल ६२ पाये गये और इसमें भी किंचित् अनुवाद-परिवर्तन केवल प्रथम भागमें १७ स्थलोंपर आवश्यक समझा गया है।

(क) श्रेणीके पाठभेद भाग १ में ६०, भाग २ में ३० और नाम ३ में ६७, इस प्रकार कुल १५७ पाये गये हैं । इनसे अर्थमें कोई भेदकी तो संभावना ही नहीं है । इनमेंके अधिकांश पाठ तो ऐसे हैं जो उपलब्ध प्रतियोंमें भी पाये जाते थे, किन्तु हमने प्राकृत व्याकरणके नियमोंको ध्यानमें रखकर परिवर्तित किये हैं । (देखिये पाठ संशोधनके नियम, षट्खं. भाग १, प्रस्तावना पृ. १०-१३)

(ड) श्रेणीके पाठभेद भाग १ में ३८, भाग २ में १५, भाग ३ में ६७, इस प्रकार कुल १२० पाये गये । इनमेंके अधिकांश तो स्पष्टत: अशुध्द हैं और जहां उनके शुध्द होनेकी संभावना हो सकती है, वहां टिप्पणी देकर स्पष्ट कर दिया गया है कि वे पाठ प्रकृतमें क्यों नहीं ग्राह्य हो सकते ।

इस प्रकार कुल पाठभेद १४९ + ६२ + १५७ + १२० = ४८८ आये हैं । संक्षेपमें यह परिस्थिति इस प्रकार है-

मूल पाठमें भेद						अनुवाद परिवर्तन		
भाग	अ	ब	क	ड	कुल	अ	ब	कुल
१ २ ३	६२ २५ ६२	३० X ३२	६० ३० ६७	३८ १५ ६७	I १९ ० ७० २२ ८	१९ १० ३२	१७ X X	३६ १० ३२
कुल	१४९	६२	१५ ७	१२०	४८ ८	६१	१७	७८

मूलपाठके संशोधनमें अर्थ और शैलीकी दृष्टिसे कुछ स्थानोंपर हमें पाठ स्खलित प्रतीत हुए थे । प्रतियोंका आधार न होनेसे हमने वे पाठ कोष्ठकोंके भीतर रखे हैं, जिससे पाठक सुलभतासे हमारे जोडे हुए पाठको अलग पहिचान सके । गत द्वितीय भागमें भी इसी प्रकार पाठ कहीं जोडना पडे थे । किन्तु वह आलाप प्रकरण होनेसे स्खलन शीघ्र दृष्टिमें आ जाते हैं । पर इस भागका विषय बहुत कुछ सूक्ष्म है, अतएव यहांके स्खलन बडे ही

गंभीर विचारके पश्चात् ध्यानमें आसके और उनका पाठ धवलाकारकी शैलीमें ही बडे विचारके साथ रखना पडा । ऐसे पाठ प्रस्तुत भागमें १९ हैं । हमें यह प्रकट करते हुए हर्ष होता है कि मूडबिद्रीके मिलानसे इन पाठोंमे के १२ पाठ जैसे हमने रखे हैं वैसे ही शब्दश: ताडपत्रीय प्रतियोंमें पाये गये (१ देखो पृष्ठ २६४, ३५४, ३८३, ३८४, ३९२, ४१२, ४२४, ४३५, ४४४, ४५१.)। एक पाठमें हमारे रखे हुए खवगा के स्थानपर बंधगा पाठ आया है, किन्तु विचार करनेपर यह अशुध्द प्रतीत होता है, वहां खवगा ही चाहिये (२ देखो पृष्ठ ४८६.)। शेष ६ पाठ मूडबिद्रीकी प्रतिमें नहीं पाये गये । किन्तु वे पाठ अशुध्द फिर भी नहीं हैं । यथार्थत: वहां अर्थकी दृष्टिसे वही अभिप्राय पूर्वापर प्रसंगसे लेना पडता है । धवलाकारकी अन्यत्र शैलीपरसे ही वे पाठ निहित किये गये हैं (३ देखो पृष्ठ ६१, २४८, ३४८, ३५३, ४४०.)।